Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

नारी अस्मिता विमर्ष सुधा आरोडा की कहानी 'रहोगी तुम वहीं' के संदर्भ में

प्रा. डॉ. शेख शरफोद्दीन फक्रोद्दीन
हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
बदनापूर

प्रस्तावना :

सातवे दशक की कथा लेखिका सुधा आरोडा ने स्त्री जीवन क विविध पक्षों को बडी संवेदनशील दृष्टी से देख परखा और अत्यंत सादगी के साथ अभिव्यक्त किया। सुधा अरोडा की कहानियाँ स्त्री जीवन के किसी अनदुए कोमळ पक्ष को अभिव्यक्त करती कर्णप्रिय लोकगीत सी लगती है जैसे कहानी है 'रहोगी तुम वहीं' कहानी का शिर्षक ही 'दर्दमंद' स्त्रियों की दरदियाँ बनकर हमारे सामने आता है। जो स्त्री अस्तित्व को नकारता दिखाई देता है। एक और दर्दमंद स्त्रियों की दर्दो को उखेरता है तो दूसरी और उनके दूसरे हाथ में उन्हे आत्मसाक्षात्कार के अस्त्र भी थमाती है जिससे ये स्त्रियाँ भावात्मक आघात और संत्रास से टूटती नहीं बल्कि मजबूत बनती है। सुध अरोडा की 'रहोजी तुम वहीं' दो या अन्य कहानियों के स्त्रीपात्र दो वे शिक्षित भी है, और आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर भी है परंतु कहीं-कहीं अपने ही निर्णय लेने में असमजस की स्थिति में होती है। 'रहोजी तुम वहीं' कहानी की नायिका दोहरा व्यक्तित्व वयथित करती है। एक और पुरुषप्रधान समाज अपनी अहंकारी सोच से नारी जीवन को प्रभावित कर रहा है। सुधा अरोडा ने अपनी चारों ओर के परिवेश को समझा और प्रत्येक वर्ग की नारी को अपनी कहानियों में स्थान दिया। चाहे व निम्नवर्गीय हो या उच्चवर्गीय, या मध्यमवर्गीय।

पहाड़ काटना, घर-घुसरी, खटराग, अस्मिता 'रहोगी तुम वहीं' में पति का एकालाप जाहिर तौर पर पत्नी से मुखतिब है। पति के पास, पत्नी शिकायतो का अंतहीन मंजर है, जिन्हें वह मुखर हो कर पत्नी पर जाहिर कर रहा है। रोजमरी की --- बातें हैं। उसे पत्नी

के हर रुप से शिकायत है। उन्हें वह स्विकारना नहीं चाहता इसलिए कहे चले जा रहा है कि 'रहोगी तुम वहीं' मुझ से पृथक।

रहोगी तुम वहीं मानसिक यातना या इमोशनल अब्यूज से गुजरती स्त्री के बारें में सब जानते हैं। यह एकालाप कथा उसी स्थिति को दर्शाती है। अवसर एक स्त्री को उसके किए किसी काम को शाबासी मिलना तो दूर की बात, दसे हर बात पर उलाहने दिए जाते हैं। सतही तौर पर देखने पर यह रोजमर्श की स्थितियों की हास्थ व्यंग की छटा बिखेरती हुई एक पति के संवादों की कथा लग सकती परंतु उसके दूरगामी परिणाम स्त्री पर होते हैं।

मानसिक स्वाथ्य के तयशुदा खाँचे से बाहर निकल, उसे आप बीती और जग-बीती के अनुभवों एवं कहानियों के चश्में से समझने की एक महत्वकांक्षी पहल मन के मुखौटे के दूसरे एपिसोड में कहानी की नायिका पति के साथ उसका मनचाहा व्यवहार करती हैं। परंतु एक पुरुषी अहंकार में चूर पति कहता है 'रहोगी तुम वहीं' उसके साथ भावनात्मक हिंसा करता है। रहोगी तुम वहीं हमें घर के अंदर हो रहे भावनात्मक हिंसा से एवं पुरुष के मुखौटों की रु-ब-रु सच्चाई से अवगत कराता है। जिसे औरत सदियों से घर के भीतर झेल रही है। नारी शताब्दियों से निरंतर अनेक प्रकार के बंधनों, परंपराओं, कुरितियों, प्रथाओं में जकडी रही है। नारी अपना अस्तित्व भूल सी गयी है। परंतु आधुनिक नारी सारे बंधनों को तोड अपना अस्तित्व बना रही है। सुधा अरोडा की कहानियों में नायिकाएँ जब भी अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष करती है, तब उसे समाज पतिव्रत की याद दिलाता आया है। रहोगी तुम वहीं में वैवाहिक जीवन के संस्कारों के प्रति उसके मन मे आक्रोश है। कहानी में पति जब कहता है - 'सारा दिन घर-घुसरी बनी क्यों बैठी रहती हो, खुली हवा में थोडा बाहर निकला करो। ढंग के कपडे पहनो। बाल सँवारने का भी वक्त नहीं मिलता तुम्हें, तो बाल छोटे करवा लो, सुरत भी सुधर जाएगी। पास-पडोस की अच्छी समझदार औरतों में उठा-बैठा करो।' कहानी की नायिका पति से मनचाहा व्यवहार करती है, अपने तौर-तरीके बदलती है। परंतु सब व्यर्थ नजर आता है। 'यह तुमने बाल इतने छोटे क्यों करवा लिए है ? मुझसे पूछ तक नहीं। तुम्हें क्या लगता है, छोटे बालों में खूबसूरत लगती हो? यु लुक हॉरिबल। तुम्हारी उम्र में ज्यादा नहीं तो दस साल और जुड जाते हैं। चेहरे पर

सुट करे या ना करें फैशन जरुर करो।' तात्पर्य तुम कुछ भी करलों मेरे लायक नहीं बन सकती, बस 'रहोगी तुम वहीं।'

औरत क्या है, महाश्वेता देवी कहती है - 'आनेवाले दिनों में सच्ची औरत, मौजूदा वक्त के साथ कदम से कदम मिलाती हुई, प्रतिरोध के आंदोलनों स जुडेगी। वह चुप्पी ओढ़कर बैठ नहीं जाएगी, रिटायर नहीं हो जाएगी।' मृदुला गर्ग कहती है - फेमिनिज्म का मतलब नारी मुक्ति नहीं, सोच की मुक्ति है। अगर स्त्री मौजूदा राजनीतिक, आर्थिक नीति और इतिहास को उन मानदंडों के अनुसार परख सकती है, जो उसने खुद ईजाद किए हैं, तो वह फेमिनिस्ट है। चित्रा मुद्गल कहती है - पिजंरा लोहे का हो या पीतल का, या फिर हीरा मोती जाडा सोने का, उसके भीतर पाँव टिकाने भीर की अलगनी स्त्री की जमीन है और उसकी तीलियों के बाहर का आसमान उसका आसमान।

यहाँ पर विचार करना जायज है कि क्या सही में वह मुक्त है? पिंजरे से बाहर निकल चुकल है ? क्या उसे विचार, स्वातंत्र्य है? क्या वह निर्गयक्षम है ? क्या आज भी आधुनिक नारी छली नहीं जाती है ? हर स्त्री की समस्याएँ अलग है। वह अलग-अलग रुपों में --- जाती है। चाहे निम्नवर्गीय हो, मध्यमवर्गीय हो या उच्चवर्गीय या शिक्षित या अशिक्षित। उसके साथ कहाँ, कौनसे स्थान पर दुर्व्यवहार नहीं होता जैसा कि कहानी 'रहोगी तुम वहीं' वह शारीरिक हिंसा की शिकार नहीं है, बल्कि मानसिक हिंसा का शिकार है। पत्नी को बोलने का कोई हक नहीं है।

यह कहानी वास्तविकता का दर्शन कराती है। जिसमें एक पति वास्तव में अपनी पत्नी से क्या चाहता है? स्वयं पति भी नहीं जान पाता कि वह अपनी पत्नी से क्या चाहता है। और अपनी दुविधा का दोष वह अपनी पत्नी पर डालता है, जो वास्तविकता का परिचय है। स्त्री अस्मिता के केंद्र में 'अस्मिता' केंद्रीय धुरी है जिसने सदियो से हाशिये पर रही। स्त्री-पुरुष में जैवीक भेद तो प्रदत्त है, लेकिन जेंडर भेद के कारण उसकी अस्मिता संदिग्ध हो गयी है। किसी भी व्यक्ति को एक सीमा तक ही दबाया जा सकता है, अवसर पाते ही वह अपनी अस्मिता (पहचान), अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर उठता है। फिर स्त्री तो इस पावन धरा की मानवी एवं बौध्दिक प्राणी है तो उसकी अस्मिता को बलपूर्वक

कब तक दबाया जा सकता है। वस्तुत: स्त्री 'अस्मिता' महिला सशक्तिकरण से जुडा सीधा प्रश्न है, जिसमें महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष निर्णय लेने की स्वायत्ता समाहित है। महिला श्रम या नौकरी का मु÷ा हो या शिक्षा साक्षरता का, सबमें महिला भेदभाव और शोषण की शिकर है। इस प्रकार नारी व्यथा और संघर्ष के आलोक में मानव समाज का अब तक का इतिहास स्त्रियों को समता, सत्ता, प्रभुता एवं शक्ति से दूर रखने का इतिहास है। बचपन से लेकर वृध्दावस्था तक स्त्री को बंधनों में जकड दिया जाता है -

"पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।

पुत्रश्च स्थविरे भारे, न स्त्री स्वातान्व्यमर्हती।"

निष्कर्ष :

अस्मिता, मनुष्यता के विकासक्रम में मानवीय भूमिका को उसका भीतरी और बाहय चेतना के साथ रेखांकित करने वाली मन: स्थिति है। जैसे मनुष्य अधिक प्रगतिशील विज्ञानसम्मान और धार्मिक सहिष्णुता के स्तर पर विकसित हुआ वैसे-वैसे अस्मिताओं ने अपने जीवनानुशासन, और समालोचनात्मक दृष्टि को भी विकसित किया। अस्मिता शब्द जहाँ निजत्त से परिचय करवाता है, वहीं जीवन के दूसरे पहलुओं से भी इसका संबंध देखा जा सकता है, असिमता विमर्श का अर्थ - आत्मनिर्णय, आत्मव्यक्ति का प्रश्न और अपने अस्तित्व का बोध। अत: ऐतिहासिक परिवतनों को प्रक्रिया में स्त्री इतिहास का साथ बखूबी निभा रही है। इस प्रयास की दिशा मे नारी अपना अस्तित्व खो रही है या तलाश रही है, इसका निर्णय काळ अपने क्रम में स्वयं कर देगा लेकिन स्त्री अस्मिता के आंदोलन स्त्री मुक्ति की दिशा में सार्थक है इसमें कोई दो राय नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सुची

१) सामाजिक मीमांसा - संपा - विजयकुमार मिश्र

२) रहोगी तुम वहीं - सुधा अरोडा

३) भारतीय नारी अस्मिता की पहचान - उमा शुक्ल

४) उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान